342/20/2/13

शोधार्थी का नाम	–	सुरेन्द्र कुमार
शोध–निर्देशक	–	डा0 एम0पी0 शर्मा प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
विभाग	–	हिन्दी विभाग, भाषा एवं मानविकी संकाय
शीर्षक	–	वर्तमान दलित–विमर्श एवं प्रेमचंद की दलित–चेतना

संक्षेपिका

दलित–विमर्श, दलित–चेतना, प्रेमचंद की दलित–चेतना

समाज के जिस वर्ग–विशेष का सदियों से परंपराओं, मान्यताओं तथा संस्कारों के नाम पर शोषण हुआ है तथा आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी कहीं न कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में हो रहा है वह ही दलित है तथा इन्हीं को केन्द्र में रखकर हुआ समस्त वाद–विवाद और वार्तालाप ही दलित विमर्श कहलाता है।

हिन्दू समाज में 'अछूत' मानी जाने वाली जातियों के लिए संभवतः सबसे पहले उन्नीसवीं सदी में महात्मा ज्योतिबा फूले ने 'दलित' शब्द का प्रयोग किया तथा उन्हें जाति विरोधी आंदोलन का अग्रदूत कहा जाता है । दलित चेतना को सबसे सशक्त स्वर डॉ0 भीमराव अंबेडकर ने प्रदान किया । महात्मा फूले, कबीर दास तथा गोतम बुद्ध से प्रभावित डॉ0 अंबेडकर ने विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक आंदोलनों के माध्यम से दलित चेतना को बुलन्द आवाज दी । इसके अतिरिक्त महात्मा गाँधी तथा आर्य समाज व ब्रह्म समाज ने भी दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया ।

वर्तमान समय में दलितों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में अपेक्षाकृत सुधार आया है किन्तु राजनीतिक रूप से दलित अभी इतने सुदृढ़ नहीं हो पाए हैं । इसके अतिरिक्त 'भूमि का बंटवारा' भी एक

ऐसा मुद्दा है जो अभी दलितों की पहुँच से दूर है । इसका प्रमुख कारण है दलित–नेतृत्व या दलित–नेताओं में पूर्ण–समर्पण का अभाव ।

दलितों का कथन है कि – 'दलितों की पीड़ा का आख्यान दलित ही लिख सकते हैं'– पूर्णतया सही है परन्तु मानव संवेदना का विस्तार करके दुखी और वंचित की पीड़ा समझा जा सकता है । इसी विचारधारा को केन्द्र में रखकर प्रेमचन्द दलित जीवन को हिन्दी–साहित्य के केन्द्र में लाने वाले प्रथम लेखक हैं। प्रेमचंद अच्छी तरह जानते थे कि तथाकथित सवर्ण समाज में ऐसे लोग भरे पड़े हैं जो दलितों के रहन–सहन, उनकी अशिक्षा आदि को बीच में लाकर उनका मार्ग अवरूद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं । ऐसे लोगों पर प्रेमचंद ने सबसे सशक्त प्रहार किए हैं ।

प्रेमचंद को दलितों की स्थिति का उचित ज्ञान था । उनका मानना था कि दलितों की वास्तविक समस्या तो आर्थिक है । वे दलितों के सामाजिक व राजनीतिक उत्थान के लिए सर्वप्रथम उनकी आर्थिक उन्नति को आवश्यक मानते थे । परन्तु वे दलितों के मंदिर–प्रवेश के विषय पर भी उतने ही प्रयासरत दिखाई देते हैं । प्रेमचंद कहते थे कि दलितों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार हो जिससे वे अपने जीवन और अपने समाज के अंधकार को दूर करके ज्ञान के प्रकाश में अपनी अर्थवेत्ता को अनुभव कर सकें ।

प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से दलित–चेतना को सशक्त स्वर दिया तथा उसकी आधार भूमि तैयार की । वास्तव में प्रेमचंद ने दलितों के लिए एक नया मंच तैयार करते हुए दलित–चेतना का प्रारूप प्रस्तुत किया और भारतीय समाज को स्वतंत्रता एवं समानता का संदेश दिया । उनका लक्ष्य दलितों को उनके अधिकार तथा सामाजिक सम्मान दिलाना था तथा यही मंतव्य उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से स्पष्ट किया है । प्रेमचंद ने दलित चेतना के लिए एक सुगठित आधार भूमि तैयार की थी जो आगे चलकर दलित–विमर्श व दलित–आंदोलन का आधार बनी । अतः प्रेमचंद की दलित–चेतना को नकारने की अपेक्षा उसे सही आयाम देने की आवश्यकता है ।